तुलसी प्रज्ञा २००१ ०१ (फोल्डर नं. ०२४५३८)

सम्पादक

डॉ. शान्ता जैन (मुमुक्षु) – हिन्दी

डॉ. जगत राम भट्टाचार्य - अंग्रेजी

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

समाज व्यवस्था और धर्म के प्रयोग – आचार्य महाप्रज्ञ ---------- १-४

जैन दर्शन में क्रियावाद का दार्शनिक स्वरुप – साध्वी गवेषणा ---------- ५-१७

जैन दर्शन में सूक्ष्म जीवों की स्थिति – डॉ. अनिल कुमार जैन ---------- १८-३०

श्वेताम्बर जैनग्रन्थद्रव्यानुयोग तर्कणा में पर्याय का स्वरुप – डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी -------- ३१-३६

प्राकृत भाषा – स्वरुप, विमर्श एवं विकास – डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ---------- ३७-४८

हास्यर्णवप्रहसनमहास्य रस की पृष्ठभूमि में – डॉ. गोपाल शर्मा ---------- ४९-५६

शिक्षा में मूल्यों की प्रतिष्ठा – सुरेश पंडित ---------- ५७-६०

जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में मूल्य चिन्तन – समणी सत्यप्रज्ञा ---------- ६१-६६

ऋषभायण – भारतीय संस्कृति के आदि सर्ग की दिव्य परिक्रमा – जतनलाल रामपुरिया ------ ६७-९०

पराशर स्मृति में अहिंसा – डॉ. बच्छराज दूगड ---------- ९१-९५

पर्यावरणीय चिन्तन आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य में – प्रो. नलिन शास्त्री ---------- ९६-१०१

अखण्ड मानवता का आन्दोलन – अणुव्रत – प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ---------- १०२-१०७

पुनर्जन्म और जाति स्मृति – साध्वी जतनकुमारी ---------- १०८-११७

राष्ट्रिय परिसंवाद ---------- ११८-१२२

Economic of Mahaveer – Prof. H. C. Singi ---------- 123-126

Moral and Personal Values in 3 Human Behaviour – Rashmi Dhar ---------- 127-130

Education and Religion – Prof. Musafir Singh Asutosh Pradhan ---------- 131-139

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org